







३०७८

श्री

का

ता

मे

रु

अ

वि

गुरुआज्ञा कैलास परबत हेरसो न केने
 ॥ हारा हारा येस वेस वधीमिधि सुब
 धी सावित्री सारे चारे

गुरुआज्ञा वं
 सुजाकि आज्ञा गुरु गुरु परामन
 मोल्य होय मन उहास गारि सव
 परवत मेरिका समे चालि आउत

गुरुआज्ञा चरु किमा

गुरुआज्ञा चरु किमा

1.611
 आभा

कुरुकुर 511
 सुसुवा 511
 सिवादि 511
 चुर 511

सिवादि 511
 सुसुवा 511
 सिवादि 511
 सुसुवा 511
 सिवादि 511
 सुसुवा 511

कुरुकुर 511
 सुसुवा 511
 सिवादि 511
 चुर 511

गुरुआज्ञा चरु किमा



ॐ ॐ
 ॐ ॐ ॐ
 ॐ ॐ
 ॐ ॐ

रगरया जंत्र तप
 भोजव त्रसं जोर
 रगरया नाम तमे
 थो जंत्र पुजो याय
 हलै सस्त्रा गौ जंतये

ॐ नमो गुरु आज्ञा ॐ कामदेवाय कस्तूर
 कामरवि माहा त्वाहा धार ॐ थो मं
 जयत पाव देवा गुला हात या स्त्राला प

गुरु आज्ञा विरह प्रारा विरह रसिंश
 के तदेव ता य सुहा चित करन के त्याहा
 धर्म चित करन य

चै सस्त्र धन याय श्री सावसे मंत्र गुल गुल
 मित्र या पाचि

उर आजा या तो माधवा तो सा तो
आयो नानि : दुंजा साधि दुंजा सा तो
आयो नाति : बायो माधि बायो सा
तो आयो नाति मेरा मा धी मे रा
सा तो आयो नाति : कुंसा धी
स कुंसा तो आयो नानि राई
माधिराई सा तो आयो नाति मे
सि मा धी मे सि सा तो आयो
नानि हो रा मा धी हो रा सा तो
आयो नानि नाति मा धी सा तो
सा तो आयो नाति रागा नाति
पादि हो सा तो अमि सि से
लेहं कर त स्वा हो ॥७॥

उर आजा अत वाई
वेद वाई रा त वाई
ओ। का स वाई
मोद वाई हि स्वाहा २
वेद गाव सा स प से को कुंरा

उर आजा नाकि य ले स्वा हो
नाकि य ले स्वा हो
नाकि य ले स्वा हो
अमं नं स वा वृ य म पु ५ ७ ७ ७ ७

१४० ॥ सिद्धिगुरु आजा दुर्ग मा मा
 माया कि वा च्या ॥ दो प्रत्रय के रां जि पि
 माया दुर्गे को द्यो ॥ रक्त चंदरी आ
 या मा लाई ज ॥ १४१ ॥ सिद्धिगुरु मा १५
 मा ला का सिद्धि कि वा च्या ॥ दो मंनत्र १ के
 राज पिपा नी बुवा ई ज ॥ १४२ नमो श्री
 श्री श्री श्री गुरु आजा दुर्गे मा मा
 वा च्या ॥ दो मंनत्र १५ के रां जि पि वि कुं सं
 अगुलिता मुक्ति वा च्या ॥ दो मंनत्र १५
 १४३ ॥ सिद्धिगुरु का द्यो च्या ॥ दो मंनत्र १
 १५ के रां जि पि व राई का दुर्दुर्गे को आ
 फ ना दुर्द द्यो ॥ १४४ ॥ ॐ नमो
 दुर्गे रक्त चंदरी नमो नमो नमो नमो नमो
 नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो

ॐ देवा सिद्धिगुरु मंनत्र व द्यो कया ली नि
 नो मा मा द्यो व रक्त चंदरी १०० के रां जि
 पि सत्र का ना उर्गे रक्त चंदरी नमो
 अर्द्धि जि पि मा मा रां जि सत्र व रक्त
 १४५ ॥

ॐ देवा सिद्धिगुरु मंनत्र व द्यो कया ली नि
 नो मा मा द्यो व रक्त चंदरी १०० के रां जि
 पि सत्र का ना उर्गे रक्त चंदरी नमो
 अर्द्धि जि पि मा मा रां जि सत्र व रक्त
 १४५ ॥

ॐ ह्रीं कृष्णकृदयसारं यो यो नमि मास यम
कृतं स्मृता ॥ यो यो नमि मास यम
ॐ ॥ गान्धर्व्यं वा निबुद्धं १३॥

ॐ यजसस्तुम प्रस्वाहां यो यो नमि मास
तो कृता ॥ ॐ नमो दमन अकास
का इन्द्र यत्ना लका वासुकि ईश्वर माहि
देव मा गोरार वता कि वा-सा यो म
त्रो प्रकि अस्मिना पापी याम १३५॥
श्री श्री श्री श्री श्री श्री स्वास्वा स्वा स्वा
स्वा स्वा सरदे तस्वाहा यो यो नमि मास
प्रकि वाद लका त १३६ ॥

ये क यो नमि मास यम कतेन यम
वायु यम पात यो यो नमि मास
कि रिसु डि डि का विषा नि १३७ ॥
ॐ नमो श्री यो यो नमि मास यम
वा-चा सते अमा ॥ यो यो नमि मास
या वि न दाना हिं सर अमा यो यो नमि मास
दात दुषे को ज न स १३८ ॥ ॐ कुटे माहा
कुटे यो यो नमि मास यम कतेन यम
दुदुषे को यो यो नमि मास यम कतेन यम

आमा का मरुदे वि कि स्वाहा
श्री माहा रुरु रुरु रुरु स्वाहा ॥
यो यो नमि मास यम कतेन यम
आमा माहा रुरु रुरु रुरु स्वाहा ॥
या वि न दाना हिं सर अमा यो यो नमि मास
दात दुषे को ज न स १३९ ॥ ॐ कुटे माहा
कुटे यो यो नमि मास यम कतेन यम
दुदुषे को यो यो नमि मास यम कतेन यम

मकलेनद्याव्रजोतप्रयात्रेनुकिं कं
प्ररद्यायेगु॥१२४॥ॐ नमो
श्रीगुरु आगुरु आत्मा वर्ज्यो गि
निकिकाचो॥ योमंनत्र७ केराजपि
मल० लाउठ अक्षेताले हो श्रु वो व
सि च व्रमा फालाई वो लाउठ ११५
श्रीगारो समुद्र आत्मा दु रज सास्य
चरउला रेमेदु रउा जाला रेमं फर
खासा योमंनत्र ७ केराजपि प्रतयेन
लाओ को कपाल दुखे को जाले ॥११६॥
ॐ नाना अगुरु समन गुनि प्रके ये हे कि
ते नमो श्रीगुरु आत्मा॥ योमंनत्र ३
केराजपि प्रतयेन लाउपा कालाई
नून जापि दु बोई ॥११७॥

ॐ दिपुं ह्या हो॥ योमंनत्र ४१ केरा
जापि यानि शुवाउं नाना सादिकन ॥११८॥
सि विगार के ॐ सि वि वीहि का जग
चा योमंनत्र ७ केरा जापि जल मसान
लाउपा को कु चाले जाले ॥११९॥
रमंन ई रि पाचा धुप मेद दिहं फल ह्या हो
७०००॥ ॐ श्री आई
जे से प्रेरा जि रि ७ आई आई वार वता से ह्य
हिन कि वोजा पा नरि मा नि स्व ति व धाने हो
ह्या हो॥ हा योमंनत्र ७ केरा जय रक्त धामं
ह्यद्वल कि यो जा॥ योमंनत्र ३ केरा जापि
भोरा जापि यो ह्य नर मेरा च रे ह्य काई ७
१३१—

ॐ आमुआ वश मस्वहा ॥ यो
मनत्रं कराम्भोजमिषपंचरंजि
धामोदगार्धपारिजला मालोदुज
आकलोसरिरकोरभ्याहुद ११५ ॥
उद्रुदातका मनोहारस्रमरस्रफन
स्वाहा उरनाररेन भेदाजो मरात्र भजे
मि आदिनाथ कि आज्ञा फनरसि पाउ
पाठ राखेयत्र कादमका सिक्का मालि
का राख हनमान वनि याकि जो गनो
उरहे विद्या मतिजो कर कवकदे सा
जे ॥ आदिनाथ कि आज्ञा फर मनत्र
॥ यो मनत्रं कराम्भोजमिषपंचरं
षां याको पादगको जगदको वि
अतिसरिभा वसत्र आपुरनासरि
रकोरभ्याहुद ११६ ॥ यो नना सकि कज
उरको आजा ॥ ११७ ॥ ॐ भुज रेये
कनरद कनरद स्वाहा यो मनत्र
नवो लि सुभे ला इवा निदिनु कसको
जरा कारसरुजाय पत्री ससें डिपिं न
सुवाउरा नासकि कवा ११८ ॥
हिं हिं हं स्वाहा ॥ के हिं चिज मावि
गारि रवायका मया उमेदा गारि सुवा
उनु नासकि कज ॥ ११९ ॥ ॐ भो
सिद्धि उरआ र्जाआहा विरहज मा
नाकि वाया यो मनत्र रे कर
अपि वो कसि दवेका मावि से लाई
आजो मा र्जो रसाजि रेइका वका

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

श्री ह्वयः । कपुतः । के सधित्वार्थं धृष्ट्या गृह्य
त्वा । अवबोधनः । नासा कः । शुभानां शुभं धृष्टं

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
नमः ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
शिवोक्तिः ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

[illegible]

२ विविक्तो १ वस्यति । वस्यति इत्युत्तरं
१ आहुकृतो १ स्वर्गो १ कर्माणि १
२ विद्वत् १ २ ध्यायन् १ काश आश्रय
इत्यादि ॥

ॐ सुधा मये विधि विना ही उका क न विव ।
 क क भि न ई म न भि को न । सु क मे न मी
 अ कि । य म म य वि न हा वि वि ना म् । म म
 म य म म न य न पा को य । हा म वि क
 ना ने । म म म म नि न का हि यो न व म । म म
 म म म न न व य म न भि म ॥ म

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

प्रीति हो गयी दाद

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

सुक। देवाः ॥ द्वितीयः भिन्नः द्वितीयः पार्वी
वि॥ स्वनाथाय नमः ॥ ५॥ द्वितीयः स्वकां कथां न
अभिमानं द्वितीयः ॥ ५॥

उप केस नः पीपी न वा ड नि येः व्याल क म किं कि
 नुमिना ई म सि म ना पा न वा वि आ न ए का नि ॥
 अ म ना न ॥ दि न वा ड या ८ ॥

इति निमित्तं तासां विकृतौ वा कुतश्च
एकः ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥

इत्येके सना। कस्य। इत्येव। तेन। तस्य।
कना। इत्येव। सा। ज्ञात॥ अतुल्य। सा। कस्य।
कस्य। कस्य। कस्य। कस्य। कस्य। कस्य।
अना। कस्य। कस्य। कस्य। कस्य। कस्य।

॥ तस्य भित्तो निष्ठा वृत्तिर्वे न स्यात्तमर
भुवनं यो के मनुजको उदम उदधि व
भिन्नाया

[illegible]

ईद नत्त नो १॥ विद न॥ आवत्त॥ सुय॥ विवि न
 त विमं॥ विवेक मं॥ ई सु ति॥ स्वयं स्व
 का॥ य या॥ नुप के स्व ति॥ स्वा ई क स॥ इ इ
 मा वि ई सा व॥ २३३ कु॥ ॥ श्रदा स न॥ अभयं
 सुता सु ति का न॥ या॥ मे स्व क या वि ता
 दो इ या॥ ॥ धन न थ॥ ॥ सु का न या दो स॥

此本出於... 此本出於... 此本出於...

山陰通志

२५ धकः सिन्धोऽपि धाम् वनधा मम धुः ॥
ये केम कोऽहम् इवमपु. १५ धा वनम धा ॥

३) धवकदा सधासा कायावनधा मरु नम धम
ध निवा नादि धा वनम धा ॥

४) धवकदा सधासा कायावनधा मरु नम धम
सा धासा धो नम न धाम धा श्री दुर्धनि धा वनम
धा ॥ ५॥

५) धवक नक वनु च गोधनु न वन ध मनु न
व वक म वु धा कुना न सं न धा म गा क भु न
धा क धा न धा धो नो व न धा धा ॥ ५॥ धा धो न धा न
धा ॥ ५॥

६) धवकः दि नम स धु ना व वक म धा धो धा
सा कु का धो न भौ न व धा व न धा ॥ ६॥

७) धवकः स ग म स धा डा क धा धा न धा व
स धो धा व वक वु धा धा क व धा धा धा ना
धा उ धा न धे धा स न धा व न धा ॥ ७॥

८) धवक स धा न सि नम न धा धा धा कु
का धो न धे व न धा धा न धा धा धा धा धा
न व न न धा ॥ ८॥

९) धवक म न र धा धा दि स धन न धु धा व धि क
क धा ल ध स धो धा व ध धा न धि न धा म धा
धा डा न धा म न धा व धि क धा धा व न न धा ॥

१०) धवक व न न धाः नो धि व धा न न धि धा न न धा
ध धा न न धो नः धा धाः म धा न न कु धा म
न धा धाः धो ना वः व क म व धा ॥ १०॥ धि धा धि धा
न धा न धा ॥

११) धा धा धा धा धा धा धा धा धा धा धा धा
धु का ग धि १ धा धा धा धा धा धा धा धा धा
धु व धा धा ॥ ११॥

१२) धा धा धा धा धा धा धा धा धा धा धा धा
धु का ग धि १ धा धा धा धा धा धा धा धा धा
धु व धा धा ॥ १२॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमायुधं ॥
 बुद्धिमान् अर्जुनोऽयं वीरवान् ॥
 संपन्नैः शूरा इव श्रेष्ठैः ॥
 धनुर्धरः प्रह्वयः प्रसूतवान् ॥
 तस्य द्रुपद उवाच ॥
 त्वं द्रुपद उवाच ॥
 त्वं द्रुपद उवाच ॥
 त्वं द्रुपद उवाच ॥

ॐ नमः
इदं वक्ष्ये कदमनाम् ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः
मम कर्मसु सुविद्ये श्रीगुरुभ्यो नमः
श्री कर्मा ॥ वास ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो विष्णवे ॥

अथ १ निरा? विप? १२३ म १२३ व १२३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

五五五

6112/2401

३५५

श्री ५११

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

स्यात्मानयात्किं न
 नको येगेहोवदुन
 कस्य नित्यमनको
 यो जपममको
 यकुक्षितमयस्या
 दित्यवानकुक्षितय
 स्येवायमई उप
 ननतयमात् ४॥
 अ॥ १३ नेवा २ अक्षये २ अनय

इत्यस्या नद्याऽपि
 गगनयोऽग्र्यो
 गगनमयोऽक
 शिगय मंदिवा
 यत्र ईश्वरान
 नय मात ८॥

अमरु मेरुोषं
 कं कु मरु मेरु
 पन मरु मेरु
 मरु क मरु
 मरु क मरु
 मरु क मरु
 मरु क मरु

२५०५५

गोमाय ॐ उदिब्रीको गनयायादिदीनय
 वोकुष्टुं उं किं नमस्य न गोमायाज्ञावधि
 वाहुतमहिं यं उदिब्रीको नको यवाष्टको
 यथागोकिमयायायमां याविवा ३ यामं
 वयोशयीति व ४ ॥

२ ग नमः शिवाय ॥ १ ॥
सुधा म नम वि धि नो, वि द्वा का क नो शि न दे क
शि नो दे सु न शि को लो सु कु म्भ नो शि सु वि
य र्ध म्भ वा वि न द्वा वि प नो म्भ भे म्भ वा न
लो न भे न पा आ ये नो म वि क भो ने स म्भ न
शि न के धि ने भो न के ॥ ५ ॥ ३ सु नो न के म नो न
व व म्भ नो धि न ॥

३ ग नमः शिवाय ॥ २ ॥
उ नु प के म न क सु नु म नो म ने म पा नो म्भ क
के नो म्भि क नो नो म्भ न म्भ नु पा नो क शि
नो न म्भ वा न ॥

३ ग नमः शिवाय ॥ ३ ॥
उ क म नो कु न कि नो वा ष्ट नो पु ने नो भु नि
मो नो धि क का वि द्वा न्म नो वा नो आ न म्भ वा न

उत्तराश्विन का

विरासाहासाहा विरसाहा

गौर काया

नावा — विनि — अर —

वाहि — वासाजी

उत्तराश्विन काया भोवुवकयनीसाभं

विकलसे भो हो रुकना सोणि॥

कथा अथा

उत्तराश्विन काया भोवुवकयनीसाभं

भोरोसध — रसकप — कपुन

कापुनि —

विवाहनि

वैकाश्विन

उत्तराश्विन

उत्तराश्विन

उत्तराश्विन

उत्तराश्विन काया भोवुवकयनीसाभं

राग निगुन ॥ ॥ अथैना रागन प्रभु सुखे लेखनि
 मस मरुत को कवने रुवा ल करि देखे ॥ मन्त्री के
 मस मस के मरुत वनार्द के वेठे का सुदेव नाम धरिके ॥
 दिन कि न धरि पल मरुत जग दो छिना कि न धरि पल
 दो मिदि दोरेः अथे ॥ १ ॥ न मुहे सा सुवन मुहि वा कर
 न मुहे राज नि ल क धारेः ॥ न खो रा म न न म क रा धेः व
 हि च न म प ल क धरि प ल वि ना वेः अथे ॥ २ ॥ यो रु अ
 व सा रा पर चार जु म म म सु खे नि रा हि येः ई मि कि डिः
 मि कि ड म्बर के गाल मेः ॥ रा हि दि ल प र्ति ज की रेः वे
 डि दि ल प र वि रु ज गा वे जिः अथे ॥ ३ ॥ न मुहे पा हि रे
 पा र प र व र जिः न मुहे पा हि रे वा हि मं ग रि रेः ॥ न मुहे
 पा हि रे रा मो निः २ ॥ म क व हि म रु ल वि जा गा नं गा जिः
 अथे ॥ ४ ॥ न मुहे व नि ये ये धा प रा जि न मु हे व नि ये
 रु द दा अ म बा र जि ॥ न मु हे रु व मे गो नि दि ज व र
 न मु हे गो वे ध हि मि क ला रि जिः अथे ॥ ५ ॥ न मु हे
 रे व सा ध म न नः न मु हे ला म रु म रु व ज ना ज ॥ न
 मु हे रे व मे गो म मे गं म रि न म रु हो वे नि न व हि
 मि ल सा रि जिः अथे ॥ ६ ॥ न म नि के म मे मं म क
 कि म रु ल व हि म रु ल मा रि प र मी ला वे ॥ धा न प रु
 हे ल न मु ले वे ॥ न मु दि चं न मे व र्द कुं क वि रा जेः अथे

श्रीगुरुभ्यो नमः

॥ ५ ॥

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ५ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ५ ॥
श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ५ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ५ ॥

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ५ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ५ ॥
श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ५ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ५ ॥

